Causes of Disequilibrium in Balance of Payment

भुगतान सन्तुलन कई मदों जैसे दृश्य एवं अदृश्य आयात और निर्यात, एकपक्षीय भुगतान प्राप्ती, आदि में एक ही दिशा में होनेवाले परिवर्तन असन्तुलन की स्थिति पैदा कर देते है। सामान्य तौर पर निम्न कारण से भुगतान शेष में असन्तुलन पैदा होते है -

1. विकास एवं विनियोग कार्यक्रम

अर्द्धविकसित देशों में भुगतान-शेष के असन्तुलन होने का मुख्य कारण, वहाँ भारी मात्रा में विकास एवं विनियोग सम्बन्धी कार्यक्रम है। ये देश द्रुत गति से औद्योगीकरण एवं आर्थिक विकास करना चाहते है किन्तु इसके लिए इनके पास पर्याप्त मात्रा में पूंजी एवं अन्य साधनों का अभाव होता है अतः इन चीजों का इन्हे विदेशों से आयात करना होता है। इसप्रकार इन देशों का आयात तो बढ़ जाता है किन्तु उसी अनुपात में इनके निर्यात में वृद्धि नही हो पाती इसप्रकार इन देशों के भुगतान-शेष में संरचनात्मक असन्तुलन हो जाता है।

2. चक्रीय उच्चावचन -

व्यापार चक्र के फलस्वरूप विभिन्न देशों

में, भिन्न अर्थव्यवस्था में, चक्रीय उच्चावचन होते है। जिनकी अवस्थाएँ विभिन्न देशों में अलग अलग होती है जिनके फलस्वरूप भुगतान-शेष में चक्रीय असन्तुलन पैदा हो जाता है। 1930 के दशक के दौरान विश्व के भुगतान-शेष में इसप्रकार का असन्तुलन पैदा हुआ था।

3. आय प्रभाव एवं कीमत प्रभाव

विकासशील देशों में आर्थिक विकास के फलस्वरूप लोगों की आय में वृद्धि होती है, जिससे कीमतों में भी वृद्धि होती है जिसका इन देशों के भुगतान-शेष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आय में वृद्धि होने से इन देशों के आयातों में वृद्धि होती है क्योंकि इनकी सीमान्त आयात प्रवृति ऊँची होती है लोगों को घरेलू वस्तुओं के उपभोग की मांग में वृद्धि होती है। इसका परिणाम यह होता है कि इनके पास निर्यात की वस्तुओं की कमी हो जाती है। जिससे निर्यात हतोत्साहित होता है।

वस्तुओं की मांग में वृद्धि होने से ~~ब~~ उनकी कीमत बढ़ने लगती है जिससे आयातों को प्रोत्साहन मिलता है। ~~जिससे~~ इसप्रकार देश के भुगतान-शेष में असन्तुलन पैदा हो जाता है।

4. निर्यात मांग में परिवर्तन

विकासशील देशों में भुगतान-शेष में असन्तुलन होने का एक प्रमुख कारण यह है कि इनके द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की मांग में परिवर्तन हुआ है। आज विकसित देश खाद्यान्न, कच्चे माल एवं अन्य वैकल्पीक वस्तुओं का उत्पादन करने लगे है जिनका कि पहले वे विकासशील देशों से आयात करते थे। इसके फलस्वरूप, विकासशील देशों के निर्यात कम हो गए हैं। जिससे उनके भुगतान-शेष में संरचनात्मक असंतुलन पैदा हो जाता है।

5. विकसित देशो में आयात प्रतिबन्ध

प्रायः विकसित देशों में अनुकूल व्यापार शर्तों एव अन्य कारणों के फलस्वरूप, उनका भुगतान शेष आतिरेक की स्थिति में रहता है और यदि वे विकासशील देशों से आयात करते रहे तो विकासशील देशों की भुगतान-शेष की स्थिति में सुधार हो सकता है। किन्तु ये देश तरह-तरह के आयात प्रतिबन्ध लगा देते है जिससे विकासशील देशों के निर्यात में वृद्धि नहीं हो पाती एव उनके भुगतान-शेष में असन्तुलन हो जाता है।

6. विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर

विकासशील देशों में जनसंख्या की वृद्धि की दर बहुत अधिक रहती है जिसका इन देशों के आर्थिक विकास एवं उसके फलस्वरूप भुगतान-शेष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण एक तो इन देशों की आयात की मात्रा में वृद्धि हो जाती है किन्तु दूसरी ओर, घरेलू उपभोग में वृद्धि होने से निर्यात-क्षमता कम हो जाती है। यह तथ्य भी इन देशों की स्थिति को भीषण बना देता है कि विकसित देशों की घटती जनसंख्या से विकासशील देशों के निर्यात में कमी हो जाती है क्योंकि इन वस्तुओं की मांग में कमी हो जाती है। फलस्वरूप विकासशील देशों के भुगतान-शेष में भारी-तुलन की समस्या और भी कठिन हो जाती है।

7. प्रदर्शन प्रभाव

प्रो० नर्कसे ने अपनी पुस्तक में प्रदर्शन प्रभाव की आपेक्ष चर्चा की है। इसका तात्पर्य यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, राजनीतिक एवं अन्य सामाजिक कारणों से जब अविकसित देश विकसित देशों के सम्पर्क में आते हैं तो वहाँ के लोग विकसित देश के लोगों की उपभोग आदतों को अपनाने के लिए प्रवृत्त होते हैं। अतः ऐसी वस्तुओं का

विदेशी से आयात किया जाता है अर्थात आयात प्रवृत्ति में वृद्धि होने लगती है, जबकि दूसरी ओर या तो उनकी निर्यात की मात्रा स्थिर रहती है अथवा उसमें कमी हो जाती है। इसके फलस्वरूप, विकासशील देशों के भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाती है

8. अन्तर्राष्ट्रीय ऋण एवं विनिमोग

अपने विकास कार्यक्रम की वित्तीय आवश्यकता के लिए बहुत से विकासशील देश, विकसित देशों से भारी मात्रा में ऋण लेते हैं जिसके ब्याज एवं मूलधन की वापसी के लिए उन्हें बहुत अधिक विदेशी विनिमय खर्च करना होता है जिससे उनके भुगतान-शेष में असन्तुलन पैदा हो जाता है। दूसरी ओर, जो देश ऋण देते हैं, उनका भुगतान-शेष अनुकूल रहता है, क्योंकि उन्हें ब्याज, आदि के रूप में विदेशी विनिमय प्राप्त होता है।

Dr Sandhya Rani